IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 6, November 2023

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 6, November 2023 |

पर्यावरणीय अर्थशास्त्र और सतत विकास लक्ष्य

सत्य नारायण कुमावत

सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र, विद्या संबल योजना, राजकीय महाविद्यालय, बड़ाखेड़ा, ब्यावर

सार

सतत् उपयोग को बढ़ावा देने वाले स्थलीय पारिस्थितिकीय प्रणालियों, सुरक्षित जंगलों, भूमि क्षरण और जैव-विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का प्रयास करना। सतत् विकास के लिये शांतिपूर्ण और समावेशी समितियों को बढ़ावा देने के साथ ही साथ सभी स्तरों पर इन्हें प्रभावी, जवाबदेहपूर्ण बनाना ताकि सभी के लिये न्याय सुनिश्चित हो सके। पर्यावरण और विकास को अब सरकारों और विकासात्मक एजेंसियों द्वारा परस्पर अनन्य नहीं माना जाता है। अब यह माना गया है कि सतत विकास के लिए स्वस्थ पर्यावरण आवश्यक है। यह पेपर विकास निर्णय लेने में पर्यावरणीय चिंताओं के प्रभावी समावेश को सुविधाजनक बनाने में पर्यावरणीय अर्थशास्त्र की महत्वपूर्ण भूमिका की व्याख्या करता है। यह पर्यावरणीय प्रभावों के मूल्यांकन के लिए अवधारणाओं और तकनीकों की समीक्षा करता है। विकासशील देशों में पर्यावरणीय संपत्तियों के मूल्य निर्धारण के लिए आर्थिक तकनीकों में सुधार और उनका उपयोग करने के प्रयास बढ़ रहे हैं। यह पेपर क्षेत्र में अभ्यासकर्ताओं को प्रगति के साथ बने रहने में मदद करना चाहता है। यह सतत विकास के लिए पर्यावरण विश्लेषण की रूपरेखा का वर्णन करता है और पर्यावरणीय मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकों के अनुसार समूहीकृत करता है।

परिचय

"प्रकृति के बिना, हमारे पास कुछ भी नहीं है। प्रकृति के बिना हम कुछ भी नहीं हैं।"

ये संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस के शब्द हैं, जो दिसंबर 2022 में मॉन्ट्रियल, कनाडा में आयोजित ऐतिहासिक संयुक्त राष्ट्र COP15 जैव विविधता शिखर सम्मेलन में दिए गए थे। उन्होंने प्रकृति और जैव विविधता की सुरक्षा के लिए कार्रवाई की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर जोर दिया। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि ग्रह के प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने, पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा करने, जलवायु परिवर्तन को कम करने, मानव स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने और दीर्घकालिक सामाजिक और आर्थिक विकास प्राप्त करने के लिए पर्यावरणीय स्थिरता आवश्यक है। पर्यावरणीय स्थिरता सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) का एक मुख्य घटक है। एसडीजी में पर्यावरणीय स्थिरता को एकीकृत करके, वैश्विक समुदाय सामाजिक और आर्थिक विकास के साथ पर्यावरणीय मुद्दों के अंतर्संबंध को स्वीकार करता है। यह वर्तमान और भविष्य दोनों पीढ़ियों के लिए एक स्थायी भविष्य सुनिश्चित करने के लिए एक संतुलित और एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर देता है।[1,2,3]

एसडीजी

सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के हिस्से के रूप में 2015 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित 17 वैश्विक लक्ष्यों का एक समूह है। ये लक्ष्य सभी के लिए एक स्थायी भविष्य प्राप्त करने के लिए सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करते हैं। एसडीजी पहले के सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (एमडीजी) पर आधारित हैं, लेकिन अपने दायरे में अधिक व्यापक और महत्वाकांक्षी हैं। वे गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, स्वच्छ ऊर्जा, पर्यावरण संरक्षण और सतत आर्थिक विकास सहित परस्पर जुड़े मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को संबोधित करते हैं।

एसडीजी सरकारों, व्यवसायों, नागरिक समाज संगठनों और व्यक्तियों को अधिक न्यायसंगत, समावेशी और टिकाऊ दुनिया की दिशा में मिलकर काम करने के लिए एक समग्र ढांचा प्रदान करते हैं। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समाज के सभी क्षेत्रों में सामूहिक कार्रवाई, नवीन दृष्टिकोण और मजबूत भागीदारी की आवश्यकता है। ये सभी 17 लक्ष्य आपस में जुड़े हुए हैं, और एक लक्ष्य में प्रगति अक्सर दूसरे लक्ष्य में प्रगति पर निर्भर करती है। एसडीजी सतत विकास की एकीकृत प्रकृति को पहचानते हैं और वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए अधिक न्यायसंगत, समावेशी और टिकाऊ दुनिया हासिल करने के लिए सहयोगात्मक और समग्र दृष्टिकोण का आह्वान करते हैं।

प्रमुख पर्यावरणीय चुनौतियाँ

वैश्विक समझौतों के बावजूद, दुनिया भर में जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र का नुकसान तेजी से बढ़ रहा है। हम प्रकृति में खतरनाक कमी देख रहे हैं और इसके लिए मनुष्य दोषी हैं। मानवता के इतिहास में किसी भी अन्य अवधि की तुलना में पिछले 50

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 6, November 2023 |

वर्षों में प्रकृति का बहुत अधिक ह्रास हुआ है, जबकि ग्लोबल वार्मिंग के खतरे तेज हो गए हैं। हम छठे महान विलोपन का सामना कर रहे हैं, जिसमें 10 लाख प्रजातियाँ खतरे में हैं। मनुष्यों ने पृथ्वी की 75% बर्फ-मुक्त सतह को बदल दिया है, आर्द्रभूमि क्षेत्रों को नष्ट कर दिया है, समुद्री आवासों को नष्ट कर दिया है, और समुद्र और जंगलों को कम कर दिया है।

उष्णकटिबंधीय क्षेत्र की दो-तिहाई से अधिक आबादी, या लगभग 2.7 बिलियन लोग, अपनी मूलभूत आवश्यकताओं में से कम से कम एक के लिए सीधे प्रकृति और जैव विविधता पर निर्भर हैं। आज, 1.6 अरब से अधिक लोग जीवनयापन के लिए जंगलों पर निर्भर हैं, जिनमें 70 मिलियन स्वदेशी लोग भी शामिल हैं, और विकासशील देशों और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले 80% लोग बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल के लिए पारंपरिक पौधों पर आधारित उपचारों पर निर्भर हैं।

पर्यावरणीय स्थिरता

पर्यावरणीय स्थिरता वैश्विक चुनौतियों की परस्पर जुड़ी प्रकृति को संबोधित करती है। यह वनों, महासागरों, आर्द्रभूमियों और जैव विविधता सहित पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य और संरक्षण को सुनिश्चित करता है। गरीबी, भुखमरी, पानी की कमी और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दे आपस में जुड़े हुए हैं और समग्र समाधान की आवश्यकता है। पर्यावरणीय स्थिरता इन चुनौतियों को एकीकृत और समन्वित तरीके से संबोधित करने, सरकारों, संगठनों, व्यवसायों और व्यक्तियों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। पारिस्थितिक तंत्र को संरक्षित और पुनर्स्थापित करके, हम पृथ्वी की प्राकृतिक प्रणालियों के संतुलन और कार्यप्रणाली को बनाए रखते हैं, जो मानव कल्याण और अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। निस्संदेह टिकाऊ प्रथाओं और नीतियों को अपनाकर, हम वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक अधिक लचीला और संपन्न विश्व बना सकते हैं।[4,5,6]

पर्यावरणीय स्थिरता में एसडीजी की भूमिका

कई लक्ष्य सीधे तौर पर पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करते हैं, जबकि अन्य का पर्यावरणीय स्थिरता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। एसडीजी प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, पानी से संबंधित चिंताओं, समुद्री मुद्दों, जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र, परिपत्र अर्थव्यवस्था, अपशिष्ट और रसायनों के पर्यावरणीय रूप से सुदृढ़ प्रबंधन और कई अन्य क्षेत्रों को संबोधित करते हैं।

यहां एसडीजी और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच कुछ प्रमुख संबंध हैं :

- लक्ष्य 6 (स्वच्छ जल और स्वच्छता) सभी के लिए स्वच्छ जल और स्वच्छता सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर देता है। इसका उद्देश्य पानी की कमी, जल प्रदूषण और अपर्याप्त स्वच्छता प्रथाओं को संबोधित करना है। स्वच्छ जल और स्वच्छता तक पहुंच पर्यावरणीय स्थिरता के साथ-साथ मानव स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता के लिए महत्वपूर्ण है।

- लक्ष्य 7 (सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा) सभी के लिए सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करने पर केंद्रित है। यह नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों और ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देता है, जो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। दीर्घकालिक पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए स्वच्छ ऊर्जा की ओर बढ़ना आवश्यक है।

- लक्ष्य 11 (टिकाऊ शहर और समुदाय) शहरों और मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, लचीला और टिकाऊ बनाने की आवश्यकता पर जोर देता है। यह शहरीकरण, वायु प्रदूषण, अपशिष्ट प्रबंधन और हरित स्थानों तक पहुंच जैसे मुद्दों को संबोधित करता है। पर्यावरणीय स्थिरता के लिए टिकाऊ शहरों और समुदायों का निर्माण महत्वपूर्ण है, क्योंकि वैश्विक आबादी का अधिकांश हिस्सा शहरी क्षेत्रों में रहता है।

- लक्ष्य 12 (जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन) का उद्देश्य टिकाऊ उपभोग और उत्पादन पैटर्न को बढ़ावा देना है। यह संसाधन दक्षता, अपशिष्ट कटौती, रसायनों और कचरे के स्थायी प्रबंधन और पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल प्रथाओं के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करता है। पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन मौलिक हैं।

- लक्ष्य 13 (जलवायु कार्रवाई) जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई पर केंद्रित है। इसमें ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, जलवायु संबंधी आपदाओं के प्रति लचीलापन बढ़ाने और जलवायु अनुकूलन उपायों को बढ़ावा देने का आह्वान किया गया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करना ग्रह की दीर्घकालिक पर्यावरणीय स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है।

- लक्ष्य 14 (जल के नीचे जीवन) और 15 (भूमि पर जीवन) क्रमशः समुद्री और स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण और टिकाऊ उपयोग के लिए समर्पित हैं। वे समुद्री प्रदूषण, अत्यधिक मछली पकड़ने, वनों की कटाई, आवास हानि और जैव

विविधता संरक्षण जैसे मुद्दों को संबोधित करते हैं। इन पारिस्थितिक तंत्रों की सुरक्षा और पुनर्स्थापना पर्यावरणीय स्थिरता और मानव और गैर-मानव दोनों प्रजातियों की भलाई के लिए आवश्यक है।

- लक्ष्य 17 (लक्ष्यों के लिए साझेदारी) पर्यावरणीय स्थिरता सहित सभी एसडीजी को प्राप्त करने में वैश्विक साझेदारी के महत्व को पहचानता है। संसाधन जुटाने, ज्ञान साझा करने और प्रभावी पर्यावरणीय पहलों को लागू करने के लिए सरकारों, व्यवसायों, नागरिक समाज और अन्य हितधारकों के बीच सहयोग आवश्यक है।[7,8,9]

पर्यावरणीय स्थिरता के लिए नीतियां और पहल

2030 तक, वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्क के चार लक्ष्य और 23 लक्ष्य पृथ्वी की 30% भूमि, महासागरों, तटीय क्षेत्रों और अंतर्देशीय जल की रक्षा करेंगे; हानिकारक सरकारी सब्सिडी को प्रति वर्ष $500 बिलियन तक कम करें; भोजन की बर्बादी को आधा कर दें; और जैव विविधता को बहाल करने के लिए विकसित से विकासशील देशों, विशेष रूप से सबसे कम विकसित देशों, छोटे द्वीप विकासशील राज्यों और संक्रमण अर्थव्यवस्था वाले देशों में अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रवाह को कम से कम $30 बिलियन प्रति वर्ष तक बढ़ाना। कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्क की स्थापना 2022 में जैव विविधता के साथ समाज के संबंध को बदलने के लिए सरकारों के बीच एक महत्वपूर्ण समझौते के रूप में की गई थी। जबकि पेरिस समझौता जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभावों को संबोधित करने का प्रयास करता है, वैश्विक जैव विविधता ढांचा प्रकृति के लिए खतरों के अंतर्निहित कारणों और मनुष्यों को इससे होने वाले लाभों को संबोधित करने का प्रयास करता है।

भारत भी विभिन्न पहलों और उपायों के माध्यम से पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में सक्रिय रूप से काम कर रहा है। भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा विकास में महत्वपूर्ण प्रगति की है। यह नवीकरणीय ऊर्जा, विशेषकर सौर और पवन ऊर्जा के दुनिया के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। देश ने 2030 तक 450 गीगावॉट हासिल करने के लिए अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता बढ़ाने के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं। भारत ने फ्रांस के साथ अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की सह-स्थापना की। आईएसए का लक्ष्य सौर ऊर्जा अपनाने को बढ़ावा देना और सौर-समृद्ध देशों के बीच सहयोग को सुविधाजनक बनाना है। स्वच्छ भारत अभियान (स्वच्छ भारत मिशन) ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता और स्वच्छता पर केंद्रित है। साथ ही जल शक्ति अभियान जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण पर केंद्रित है। सरकार ने गंगा नदी को पुनर्जीवित और साफ़ करने के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम भी शुरू किया है। सरकार ने जैविक खेती, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और कृषि पारिस्थितिकी प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई) जैसी पहल शुरू की है।

चुनौतियाँ और आगे का रास्ता

जबकि सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करते हैं, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता हानि, अस्थिर खपत और उत्पादन, पानी की कमी और प्रदूषण, शासन और नीति कार्यान्वयन और वैश्विक सहयोग जैसी कई चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो पर्यावरणीय विचारों को विकास योजना में एकीकृत करे, टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा दे, क्षमता निर्माण प्रयासों को बढ़ाए और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दे। इसमें पर्यावरणीय क्षरण में योगदान देने वाले सामाजिक और आर्थिक कारकों को संबोधित करने, समावेशिता सुनिश्चित करने और समुदायों को सतत विकास प्रयासों में भाग लेने के लिए सशक्त बनाने की भी आवश्यकता है।

पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने की दिशा में प्रगति में तेजी लाने के लिए, उन रणनीतियों और उपायों को लागू करना महत्वपूर्ण है जो प्रमुख चुनौतियों का समाधान करते हैं और टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देते हैं। कुछ रणनीतियाँ जो प्रगति में तेजी लाने में मदद कर सकती हैं; नीतिगत ढाँचे को मजबूत करना, टिकाऊ उपभोग और उत्पादन को बढ़ावा देना, नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश बढ़ाना, जैव विविधता का संरक्षण और पुनर्स्थापन करना, अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार करना, जलवायु कार्रवाई को मजबूत करना, सहयोग और साझेदारी को बढ़ावा देना, और सबसे अंत में पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा देना है।

अंत में, मुझे कहना होगा कि जलवायु मुद्दे को संबोधित करने और सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने के प्रयास तब तक विफल रहेंगे जब तक कि विश्व नेता, सरकारें, व्यवसाय और व्यक्ति प्रकृति पर भारी दबाव को कम करने के लिए निर्णायक कदम नहीं उठाते। वास्तव में, प्रकृति में निवेश अन्य प्रकार के विकास से विमुख नहीं है; बल्कि, यह प्रगति और टिकाऊ भविष्य के लिए आवश्यक है।[10,11,12]

विचार-विमर्श

सतत विकास (एसडी) समकालीन विकास चर्चा में एक लोकप्रिय मुहावरा बन गया है। हालाँकि, इसकी व्यापकता और पिछले कुछ वर्षों में इसे मिली भारी लोकप्रियता के बावजूद, यह अवधारणा अभी भी अस्पष्ट लगती है क्योंकि बहुत से लोग इसके अर्थ और

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 6, November 2023 |

इतिहास के बारे में सवाल पूछते रहते हैं, साथ ही विकास सिद्धांत और व्यवहार के लिए इसमें क्या शामिल है और क्या निहित है। इस पेपर का उद्देश्य सतत विकास की तलाश में मानव सोच और कार्यों के लिए प्रतिमान और इसके निहितार्थ को समझाकर एसडी पर चर्चा में योगदान देना है। यह व्यापक साहित्य समीक्षा के माध्यम से किया जाता है, जिसमें "व्यवस्थित समीक्षा और मेटा-विश्लेषण के लिए पसंदीदा रिपोर्टिंग आइटम (PRISMA) दिशानिर्देश और पुनरावर्ती सामग्री अमूर्त (RCA) विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के पहलुओं का संयोजन होता है। पेपर पाता है और तर्क देता है कि सतत विकास का पूरा मुद्दा अंतर- और अंतर-पीढ़ीगत समानता पर केंद्रित है, जो अनिवार्य रूप से तीन-आयामी विशिष्ट लेकिन परस्पर जुड़े स्तंभों, अर्थात् पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और समाज पर आधारित है। निर्णय लेने वालों को इन स्तंभों के बीच संबंधों, पूरकताओं और व्यापार-बंदों के प्रति लगातार सचेत रहने की आवश्यकता है और इस प्रतिमान के सिद्धांतों को बनाए रखने और बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय, सामुदायिक और व्यक्तिगत स्तरों पर जिम्मेदार मानव व्यवहार और कार्यों को सुनिश्चित करना होगा। मानव विकास का हित. यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर कोई टिकाऊ है, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय संसाधन प्रबंधन पर नीतियों, शिक्षा और विनियमन के संदर्भ में प्रमुख खिलाड़ियों-विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र (यूएन), सरकारों, निजी क्षेत्र और नागरिक समाज संगठनों द्वारा और अधिक काम करने की जरूरत है।[13,14,15]

पर्यावरण और सतत विकास संस्थान में आपका स्वागत है हमारा भविष्य का विकास, सीमित जनसंख्या और प्राकृतिक संसाधनों की कमी और वैश्विक जलवायु परिवर्तन से विवश है, इसलिए समाज के आगे के विकास के लिए हमें एक सतत तरीके से विकास करना चाहिए। आर्थिक विकास, सामाजिक विकास और प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण में सामंजस्य स्थापित करने की चुनौती को व्यापक रूप से वैश्विक समुदाय के सामने सबसे बड़े मुद्दे के रूप में देखा जाता है। सतत विकास के लिए सक्रिय और जानकार नागरिकों की आवश्यकता होती है और जटिल और अंतःसंबंधित आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में सही विकल्प बनाने में सक्षम निर्णय लेने वाले और सूचना देने वाले निर्णयकर्ता मानव समाज का सामना कर रहे हैं।

रियो अर्थ समिट के एजेंडा 21 ने जोर दिया कि पर्यावरण और विकास के मुद्दों के समाधान के लिए शिक्षा सतत विकास को बढ़ावा देने और लोगों की क्षमता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दिसंबर 2002 में अपने 57 वें सत्र में, 2005 - 2014 की अवधि के लिए सतत विकास के लिए शिक्षा की घोषणा (2014) की घोषणा की। DESD ने शिक्षा को पुनर्विचार और पुनर्विचार द्वारा मौजूदा शिक्षा कार्यक्रमों के पुनरुद्धार पर जोर दिया, जिसमें अधिक सिद्धांतों, ज्ञान, कौशल को शामिल किया गया। , हमारे वर्तमान और भविष्य के समाजों के लिए महत्वपूर्ण तीनों सामाजिक, पर्यावरण, और आर्थिक में से प्रत्येक में स्थिरता से संबंधित दृष्टिकोण और मूल्य। यह कल्पना की जाती है कि सतत विकास के लिए शिक्षा व्यक्तियों और समूहों, समुदायों, संगठनों और देशों की क्षमता को मजबूत और विकसित करेगी और स्थायी विकास के पक्ष में निर्णय और विकल्प देगी।

2002 के जोहान्सबर्ग पृथ्वी शिखर सम्मेलन से एक मजबूत संदेश यह था कि अनुसंधान समुदाय को उन समस्याओं के व्यावहारिक समाधान पर काम करने के लिए विकास और अन्य समुदायों के साथ जुड़ने के लिए एक बड़ी इच्छा के साथ स्थिरता की समस्याओं की पहचान करने में अपनी ऐतिहासिक भूमिका को पूरा करने की आवश्यकता है। इस शिखर सम्मेलन ने जल, ऊर्जा, स्वास्थ्य, कृषि और जैव विविधता के लिए तथाकथित "WEHAB" लक्ष्यों के संदर्भ में सतत विकास प्राथमिकताओं को परिभाषित किया।

परिणाम

संयुक्त राष्ट्र के विज़ुअलाइज़ेशन के अनुसार कि उच्च शिक्षा को सतत विकास के क्षेत्र में उचित ज्ञान और दक्षताओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पर्यावरण और सतत विकास का एक राष्ट्र-स्तरीय संस्थान स्थापित किया गया है। संस्थान सतत विकास के बारे में शिक्षा को कवर करेगा (जो इसमें शामिल है के बारे में जागरूकता विकसित कर रहा है) और सतत विकास के लिए शिक्षा (स्थिरता प्राप्त करने के लिए एक उपकरण के रूप में शिक्षा का उपयोग करना)। संस्थान निर्देशित अनुसंधान के माध्यम से सतत विकास लक्ष्यों से संबंधित महत्वपूर्ण वैज्ञानिक और सामाजिक मुद्दों की बेहतर समझ के लिए समर्पित होगा। प्राकृतिक दुनिया का व्यापक विनाश एसडीजी की खोज को कमजोर कर रहा है और मानवता के भविष्य को खतरे में डाल रहा है। जलवायु परिवर्तन, प्रकृति और जैव विविधता की हानि, और प्रदूषण और अपशिष्ट का मानव-प्रेरित त्रिग्रही संकट प्रकृति को टूटने की ओर धकेल रहा है।

यह हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन, जिस हवा में हम सांस लेते हैं, जो पानी हम पीते हैं और उन सामग्रियों और संसाधनों को खतरे में डाल रहा है जिन पर हमारा समाज बना है।

तिहरा संकट गरीबों, महिलाओं और स्वदेशी लोगों सहित कमजोर लोगों पर सबसे अधिक भारी पड़ रहा है। जब तक मानवता अपने पर्यावरणीय पाठ्यक्रम को नहीं बदलती, एसडीजी हासिल करना असंभव होगा।[16,17,18]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 6, November 2023 |

निष्कर्ष

सतत विकास का अर्थ है वर्तमान की जरूरतों को पूरा करते हुए यह सुनिश्चित करना कि भावी पीढ़ियाँ अपनी जरूरतों को पूरा कर सकें।

इसके तीन स्तंभ हैं: आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक। सतत विकास प्राप्त करने के लिए, इन तीन क्षेत्रों में नीतियों को एक साथ काम करना होगा और एक-दूसरे का समर्थन करना होगा।

2015 में, विश्व नेताओं ने एजेंडा 2030 पर सहमति व्यक्त की, जो संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रस्तावित 17 सतत विकास लक्ष्यों और 169 लक्ष्यों का एक सेट है।

यूरोपीय संघ ने एजेंडा 2030 को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यूरोपीय संघ और उसके सदस्य देश एजेंडा 2030 और उसके सतत विकास लक्ष्यों को यूरोपीय संघ की नीतियों में लागू करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध हैं।

जून 2022 में, आयोग ने अपनी व्यापार और सतत विकास (टीएसडी) नीति की समीक्षा प्रकाशित की ।

यूरोपीय संघ व्यापार नीति और सतत विकास

सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए यूरोपीय संघ के कानून को व्यापार नीति सहित सभी प्रासंगिक यूरोपीय संघ नीतियों की आवश्यकता होती है। यूरोपीय संघ की व्यापार नीति का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि आर्थिक विकास साथ-साथ चले:

- सामाजिक न्याय;
- मानवाधिकारों के प्रति सम्मान;
- उच्च श्रम मानक, और;
- उच्च पर्यावरण मानक।

यूरोपीय संघ यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि व्यापार नीति निम्नलिखित के माध्यम से सतत विकास को बढ़ावा देने में मदद करे:

- यूरोपीय संघ के व्यापार समझौते;
- विकासशील देशों के लिए विशेष प्रोत्साहन, और;
- व्यापार और विकास नीति.

यूरोपीय संघ व्यापार नीति में विशिष्ट मुद्दों को संबोधित करके सतत विकास को बढ़ावा देता है:

यूरोपीय संघ के व्यापार समझौतों में सतत विकास

व्यापार समझौते यूरोपीय संघ और भागीदार देशों दोनों में सतत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण चालक हैं। आधुनिक यूरोपीय संघ व्यापार समझौतों में व्यापार और सतत विकास पर नियम शामिल हैं।

यूरोपीय संघ के व्यापार समझौतों में सतत विकास पर अधिक जानकारी ।

पर्यावरण संरक्षण

अपनी व्यापार नीति के माध्यम से यूरोपीय संघ अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण नियमों के कार्यान्वयन का समर्थन करता है, जो मुख्य रूप से बहुपक्षीय पर्यावरण समझौतों में निर्धारित हैं।

पर्यावरण संरक्षण पर अधिक जानकारी .

मानव अधिकार

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 6, November 2023 |

यूरोपीय संघ की व्यापार नीति, अपनी विदेश नीति और विकास सहयोग के साथ, गैर-ईयू देशों में मानवाधिकारों के सम्मान का समर्थन करती है।[19]

मानवाधिकारों पर अधिक जानकारी .

श्रम अधिकार

यूरोपीय संघ 'नीचे की ओर दौड़' को रोकने के साथ-साथ बेहतर श्रम मानकों को बढ़ावा देने के लिए बढ़े हुए व्यापार अवसरों का उपयोग करता है।

श्रम अधिकारों पर अधिक जानकारी .

एकल प्रवेश बिंदु

व्यापार और सतत विकास प्रतिबद्धताओं के गैर-अनुपालन के बारे में सूचित करने के लिए यूरोपीय संघ संपर्क बिंदु।

एकल प्रविष्टि बिंदु फ़ाइलों पर अधिक जानकारी

जिम्मेदार व्यवसाय

यूरोपीय संघ की व्यापार नीति यह सुनिश्चित करने में मदद करना चाहती है कि कंपनियां श्रमिकों और पर्यावरण का सम्मान करते हुए अपने उत्पादों का उत्पादन जिम्मेदारी से करें।[20]

संदर्भ

1. क्लार्क, विलियम; हार्ले, एलिसिया (2020)। "स्थिरता विज्ञान: एक संश्लेषण की ओर"। पर्यावरण और संसाधनों की वार्षिक समीक्षा । 45(1): 331-86। doi: 10.1146/annurev-environ-012420-043621 । इस आलेख में CC BY 4.0 लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध पाठ शामिल है ।
2. ^ जॉनसन, जस्टिन एंड्रयू; बाल्डोस, उरिस लैंट्ज़; कोरोंग, इरविन; हर्टेल, थॉमस; पोलास्की, स्टीफन; सर्विग्नि, रैफ़ेलो; रॉक्सबर्ग, टोबी; रूटा, जियोवानी; सलेमी, कोलेट; ठकरार, सुमिल (2022)। "प्रकृति में निवेश करने से इक्विटी और आर्थिक रिटर्न में सुधार हो सकता है" । राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की कार्यवाही । 120 (27): ई2220401120। बिबकोड : 2022PNAS..12020401J । डीओआई : 10.1073/पीएनएएस.2220401120 । पीएमसी 1031 8957 । पीएमआईडी 37364118 ।
3. ^ रॉबर्ट, केट्स डब्ल्यू.; पैरिस, थॉमस एम.; लीसेरोविट्ज़, एंथोनी ए. (2005)। "सतत विकास क्या है? लक्ष्य, संकेतक, मूल्य और अभ्यास"। पर्यावरण: सतत विकास के लिए विज्ञान और नीति । 47 (3): 8-21. बिबकोड : 2005ESPSD..47c...8R । डीओआई : 10.1080/00139157.2005.10524444 । एस2सीआईडी 154882898 ।
4. ^ मेन्सा, न्यायमूर्ति (2019)। "सतत विकास: अर्थ, इतिहास, सिद्धांत, स्तंभ, और मानव कार्रवाई के लिए निहितार्थ: साहित्य समीक्षा" । ठोस सामाजिक विज्ञान । 5 (1): 1653531. डीओआई : 10.1080/23311886.2019.1653531 ।
5. ^ संयुक्त राष्ट्र महासभा (1987) । पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग की रिपोर्ट: हमारा साझा भविष्य 31 मार्च 2022 कोवेबैक मशीनसंग्रहीत किया गया। दस्तावेज़ ए/42/427 के अनुलग्नक के रूप में महासभा को प्रेषित - विकास और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: पर्यावरण।
6. ^ संयुक्त राष्ट्र महासभा (20 मार्च 1987)। " पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग की रिपोर्ट: हमारा साझा भविष्य ; दस्तावेज़ ए/42/427 के अनुलग्नक के रूप में महासभा को प्रेषित - विकास और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: पर्यावरण; हमारा साझा भविष्य, अध्याय 2: सतत विकास की ओर ; परिच्छेद 1" । संयुक्त राष्ट्र महासभा । 1 मार्च 2010 को पुनःप्राप्त .
7. ^ पुर्विस, बेन; माओ, योंग; रॉबिन्सन, डैरेन (2019)। "स्थिरता के तीन स्तंभ: वैचारिक उत्पत्ति की खोज में" । स्थिरता विज्ञान . 14 (3): 681-695। बिबकोड : 2019SuSc...14..681P । डीओआई : 10.1007/एस11625-018-0627-5 । पाठ को इस स्रोत से कॉपी किया गया था, जो क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस के तहत उपलब्ध है
8. ^ "सतत विकास" । यूनेस्को . 3 अगस्त 2015 । 20 जनवरी 2022 को लिया गया ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 6, November 2023 |

9. ^ ब्राउन, जेम्स एच. (2015)। "सतत विकास का ऑक्सीमोरोन"। जिव शास्त्र । 65(10): 1027-1029। डीओआई: 10.1093/बायोसाइ/बीआईवी117 ।
10. ^ विलियम्स, कॉलिन सी; मिलिंगटन, एंड्रयू सी (2004)। "स्थायी विकास के विविध और विवादित अर्थ"। भौगोलिक जर्नल । 170(2): 99-104। बिबकोड:2004GeogJ.170...99W। doi:10.1111/j.0016-7398.2004.00111.x। एस2सीआईडी143181802।
11. ^ बर्ग, क्रिश्चियन (2020)। सतत कार्रवाई: बाधाओं पर काबू पाना। एबिंगडन, ऑक्सन। आईएसबीएन 978-0-429-57873-1. ओसीएलसी 1124780147 ।
12. ^ कीबल, ब्रायन आर. (1988)। "द ब्रंटलैंड रिपोर्ट: 'हमारा साझा भविष्य'"। चिकित्सा और युद्ध । 4 (1): 17-25। doi : 10.1080/07488008808408783 ।
13. ^ पुर्विस, बेन; माओ, योंग; रॉबिन्सन, डैरेन (2019)। "स्थिरता के तीन स्तंभ: वैचारिक उत्पत्ति की खोज में"। स्थिरता विज्ञान. 14(3): 681-695। बिबकोड:2019SuSc...14..681P। डीओआई: 10.1007/एस11625-018-0627-5 । आईएसएसएन1862-4065। पाठ को इस स्रोत से कॉपी किया गया था, जो क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस के तहत उपलब्ध है
14. ^ रैमसे, जेफ़री एल. (2015)। "स्थिरता को परिभाषित नहीं करने पर" । जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल एंड एनवायर्नमेंटल एथिक्स । 28 (6): 1075-1087. डीओआई : 10.1007/एस10806-015-9578-3 । आईएसएसएन 1187-7863 . एस2सीआईडी 146790960 ।
15. ^ कोट्ज़े, लुई जे.; किम, राख्युन ई.; बर्डन, पीटर; डु टिट, लुईस; ग्लास, लिसा-मारिया; काशवान, प्रकाश; लिवरमैन, डायना; मोंटेसानो, फ्रांसेस्को एस.; रंटाला, सल्ला (2022), सेनिट, कैरोल-ऐनी; बर्मन, फ्रैंक; हिकमैन, थॉमस (संस्करण), "प्लैनेटरी इंटीग्रिटी", सतत विकास लक्ष्यों का राजनीतिक प्रभाव: वैश्विक लक्ष्यों के माध्यम से शासन को बदलना? , कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, पीपी. 140-171, डीओआई : 10.1017/9781009082945.007 , आईएसबीएन 978-1-316-51429-0
16. ^ बॉसेलमैन, क्लॉस (2010)। "पेड़ों के लिए जंगल खोना: कानून में पर्यावरणीय न्यूनीकरणवाद" । वहनीयता । 2 (8): 2424-2448। डीओआई : 10.3390/एसयू2082424 । एचडीएल : 10535/6499 । आईएसएसएन 2071-1050 । पाठ को इस स्रोत से कॉपी किया गया था, जो क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन 3.0 इंटरनेशनल लाइसेंस के तहत उपलब्ध है
17. ^ बर्ग, क्रिश्चियन (2020)। सतत कार्रवाई: बाधाओं पर काबू पाना । एबिंगडन, ऑक्सन। आईएसबीएन 978-0-429-57873-1. ओसीएलसी 1124780147 ।
18. ^ "स्थिरता" । एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका । 31 मार्च 2022 को लिया गया ।
19. ^ "सतत विकास" । यूनेस्को . 3 अगस्त 2015 । 20 जनवरी 2022 को लिया गया ।
20. ^ उलरिच ग्रोबर: गहरी जड़ें -"सतत विकास" का एक वैचारिक इतिहास (नचल्टिग्केइट) 25 सितंबर 2021 कोवेबैक मशीनसंग्रहीत, विसेनशाफ्टज़ेंट्रम बर्लिन फर सोज़ियालफोर्सचुंग, 2007

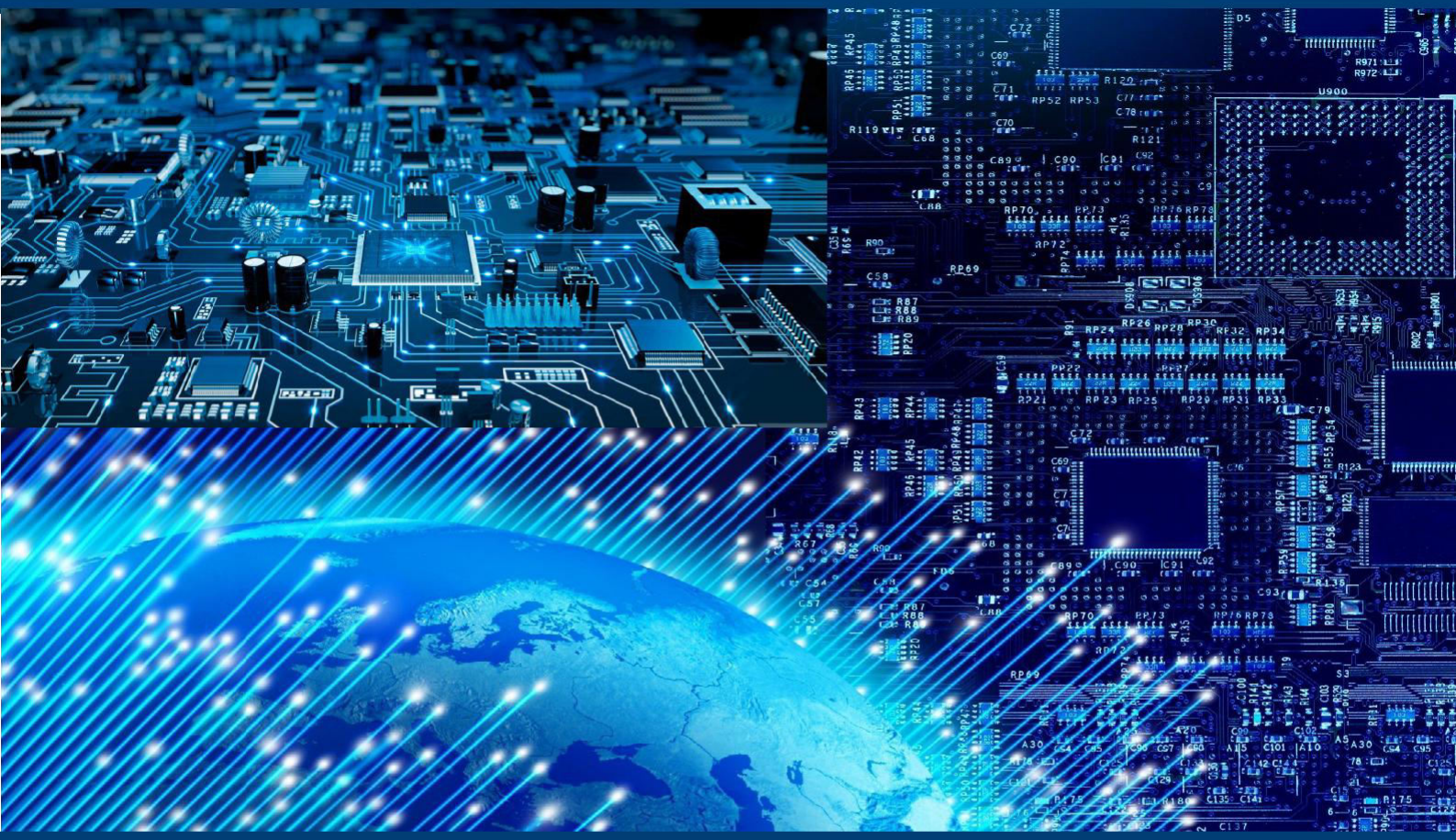

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |